मुठुस्वामी दीक्षितार (1776-1835)

दीक्षितार परिवार शास्त्रीय कर्नाटक संगीत के इतिहास में अपने योगदान के लिये प्रसिद्ध है। लगभग 100 से भी अधिक वर्षों तक संगीत सेवा के लिये इस परिवार ने अपनी एक पहचान बना ली।

मुठुस्वामी दीक्षितार संगीत के तिगड़ी (तीन का समूह) में सबसे छोटे माने जाते हैं। इनका जन्म त्रावनकोर (Travacore) में 24 मार्च 1776 को हुआ था। चुंकि इनका जन्म भगवान मुठुस्वामी की कृपा से पूजा अर्चना के फलस्वरूप हुआ था, इसलिये इनका नाम उनके नाम से ही यानि मुठुस्वामी दीक्षितार रखा गया। अल्पायु में ही मुठुस्वामी दीक्षितार संगीत एवं संस्कृत में प्रवीण हो गये थे।

मुठुस्वामी का विवाह अल्पायु में ही कर दिया गया था लेकिन वैवाहिक जीवन में उनकी रुचि नहीं थी। सांसारिक सुख उन्हें नहीं बांध सके। वे ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते थे।

पहली संगीत रचना उन्होंने तिरुगिरी स्थान (तिरूत्तनी) में बनाई 'स्त्रीनाथादि गुरूगुहो जयति जयति' जो मायामालवगौल राग में है तथा आदि ताल में है। दूसरी कृति 'मानस गुरूगुहो रूपम' भी तिरूत्तनी में ही बनाई। यहाँ से वे कांचीपुरम गए तथा भगवान कामाक्षी की तथा एकाम्रनाथ की आराधना में कृतियां गाई। वे बहुत जल्द ही उच्च कोटि के रचनाकार (composer) बन गए। 1817 में उनके माता पिता का देहान्त हो गया।

मुठुस्वामी ने अपने शिष्यों को अपनी रचनाएँ सिखाई जिनमें उनके दो भाई चिन्नास्वामी तथा बालास्वामी भी शामिल थे जो मिलकर उनकी रचनाएँ गाते थे।

मदुराई से कुछ प्रतिष्ठित लोगों के कहने पर मुठुस्वामी ने दोनो भाईयों को मदुराई भेज दिया जहाँ वे मुठुस्वामी की रचनाएँ सिखाने का कार्य करते थे।

Scanned with CamScanner

दीक्षितार एक वीणावादक (वैणिक) तथा गायक भी थे। वे रात्रि को तिरूवारूर मंदिर के द्वार पर बैठकर अपनी रचनाएँ गाते थे।

मुतुस्वामी दीक्षितार द्वारा रचित कृतियाँ जो संस्कृत भाषा में है, प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। उनकी रचनाओं में समुदाय कृतियों का बाहुल्य है। ये कृतियाँ विभिन्न देवी, देवताओं की आराधना, प्रशंसा में लिखी गई है। वे कविताएँ लिखने में भी प्रवीण थे। सबसे अधिक समुदाय कृतियों की रचना करने का श्रेय मुठस्वामी को है।

कृतियों की रचनाओं में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों का निर्देश भी उन्होंने दिया है।

'एकताल खंडजाति' में भी उनकी रचनाएँ पाई जाती हैं जिसमें 'स्रीदुनदुर्गे' (Sridundurge) जो स्रीरंजनी राग में हैं विशेष उल्लेखनीय है। उनकी रचना पल्लवी नीलकण्ठभजे जो 'केदारगौल' राग में है पाँच आवर्तों में है। उनकी रचनाएँ विलम्बित लय में होने से मौलिकता और सूक्ष्म श्रुतियों और गमकों से ओतप्रोत हैं जिसमें वैणिक शैली की अनोखी छाप दिखाई देती है। सबसे अधिक समुदाय कृतियों की रचना मुतुस्वामी दीक्षितार द्वारा हुई हैं जिसमें 'आवरन कीर्तन' 'कमलाम्बा नवावरन कृति', ध्यान कीर्तन, कमलाम्बम भजरे, मंगल कीर्तन- स्रीकमालम्बिके विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त 'अभयाम्बा' नवावरण कृतियाँ तथा 'शोदश गणपति कृतियाँ' भी उल्लेखनीय है, जो 16 गणपतियों से सम्बन्धित हैं जो तिरुवारुर मन्दिर के प्रांगण में है। मुतुस्वामी ने विभिन्न क्षेत्रों के मंदिरों के देवी देवताओं पर क्षेत्र कृतियों की रचना की है जिसमें कांचीपुरम, नागापट्टनम, मदुराई, तिरूवारूर, तिरुचिरापल्ली, रत्नागिरी आदि के मंदिर उल्लेखनीय हैं। अपने आख़िरी दिनों में वे तिरावारूर से एटैयापुरम के महाराज के पास सन 1835 में पहुँचे और वहीं कुछ दिन पश्चात् उनका देहान्त हो गया। उनके प्रमुख शिष्यों में उनके दो भाई चिन्नास्वामी दीक्षितार तथा बालास्वामी दीक्षितार के नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त तिरूक्कायय्यूर भारती जो तमिल और संगीत में प्रवीण थे, अवडैयारकोविल वीणा वेंकटरमैयार जो कुशल वीणावादक थे, तेवूर सुब्रमन्या जो कुशल गायक थे, सुद्ध मडडलम तम्बैयप्पा, कोर्नाड रामास्वामी (भरतनाट्य), पोन्नया, चिन्नया, शिवानन्दम, वादीवेलू, तिरूवारूर कमलन (नृत्य) के नाम उल्लेखनीय हैं।

Scanned with CamScanner